Vol 5 Issue 11 August 2016

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies,
Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Dr. T. Manichander
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad.

Advisory Board

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal
University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.....

ISSN: 2249-894X Impact Factor : 3.1402(UIF) Volume - 5 | Issue - 11 | August - 2016

Review Of Research

पंजाबी दलित कहानी : एक अध्ययन

डॉ. सौरभ कुमार
पी.एच.डी. हिन्दी शोध केन्द्रएस.सी.डी. राजकीय महाविद्यालय , लुधियाना.

प्रस्तावना –

भारतीय समाज आरम्भ से ही जातिवादी रहा है और किसी न किसी रुप में इस जाति व्यवस्था का विरोधा भी शुरु से ही उपस्थित रहा है। आधुनिक पंजाबी कहानी पिछले कई वर्षो से नये अनुभवों और नये विचार संसार को लेकर पाठकों के सम्मुख हो रही है। इस तरह पंजाबी कथा जगत में दलित परिप्रेक्ष्य शक्तिशाली और कलात्मक रुप को धारण करता है। ''पंजाबी की पहली दलित कहानी सुजान सिंह की 'बागां का राखा' को जा सकता है इस कहानी में दलित जीवन की यथार्थवादी दृष्टि प्रस्तुत की गई है। दलितों के साथ हो रहे तिरस्कार पूर्ण व्यवहार, अमानवीयता, दुखान्त विवरण आदि इस कहानी में देखे जा सकते हैं।''[1] दलित वर्ग से संबंधित कहानीकारों ने विषय और रुपके पक्ष से अपने मॉडल स्वयं निर्मित किये हैं। यह मॉडल जहां अपना अलग अस्तित्त्व रखे हुए है वही मुख्य बीज के रुप में यह दलित वर्ग की ही समस्याओं को पेश करते है। ''दलित चेतना मूल रुप में गांव के यथार्थ की उस लड़की का पक्ष उजागर करती है जिसकी अगुवाई निम्न कृषक श्रेणिक चेतनता के कथाकार कर रहे हैं। इस वर्ग के साहित्यकारों ने भूमिहीन लोगों के जीवन वृत्तांत को अपनी रचनाओं का आधार बनाया है।''[2] दलित साहित्य के आधार की मुख्य प्रेरक शक्ति जाति व्यवस्था से उत्पन्न होकर मरने तक गुलामी सहन करने की घुटन में जन्म ले रही है। आज दलित कहानियों में हो रहे परिवर्तन की आहट बहुत साफ सुनाई दे रही है। चाहे वे व्यक्ति के भीतर हो रहे हों या बाहर। दलित कहानी आंदोलन का प्रभाव उसके सच की बेखौफ अभिव्यक्ति में है जिसके लिए बहुत साहस की आवश्यकता है। दलित कथाकारों में यह साहस है। सदियों से शोषित, अस्पृश्य दलित वर्ग में अपनी स्थिति के प्रति आक्रोश है, उसमें मुक्ति की छटपटाहट है, अवरोधक तत्त्वों के विरूद्ध या इसी स्थिति में जीने के लिए उन्हें विवश करने वालों के प्रति सशक्त विद्रोह का भाव है और इस विद्रोह को साकार रूप देने हेतु उनमें पनपी है – एकता।

पंजाबी दलित कहानी साहित्य के अंतर्गत 'अतरजीत' के दो कहानी संग्रह 'सबूते कदम' 'तीजा यु) (तीसरा यु) विशेष रुप से उल्लेखनीय है, इसके अतिरिक्त 'देशराज काली' का 'फकीरी', 'गुरमीत कल्लरमाजरी' का 'तीसरी दुनिया', 'भगवंत रसूलपुरी' का 'तीजा नेत्र (तीसरा नेत्र)', 'गुरमीत कड़ियालवी' का 'आतु खोली', 'भगवंत रसूलपुरी' का 'मरण ऋतु', 'अजमेर सिद्धू' का 'खूह गिड़दा है', 'मख्खन मान' का 'खुल दे पानी' 'कृपाल कज़ाक' का 'हुम्स', 'बलवीर परवाना' का 'धुंआ', 'सरुप सियालवी का 'पिंड अजे जिंदा है।' आदि उल्लेखनीय हैं। इन पंजाबी कथाकारों के अतिरिक्त प्रेम गोरखी, भूरा सिंह कलेर, मोहन लाल फिल्लोरिया, जिंदर, अजमेर सिंह, सर्वमीत, वरियाम संधू, मोहन भण्डारी, तलविन्दर सिंह, बलजिन्द्र नसराली, गुरबचन भूलर, बलविन्दर, सुजान सिंह संतोष आदि ने भी दलित कहानी साहित्य में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान प्रदान किया है।

पंजाबी कहानी में दलित वर्ग की पेशकारी से सम्बन्धित कहानी चाहे संत सिंह सेखों, सुजान सिंह, संतोष सिंह धीर आदि से मानी जाती हो परन्तु जिस तरह आधुनिक कहानी में दलित वर्ग की आर्थिक, सामाजिक और मानसिक उलझनों को फोकस किया गया है। वैसा पहली कहानियों में नहीं था। उस समय पंजाबी कहानियां मध्यवर्ग के घेरे से बाहर निकल नहीं पाई थी। पंजाबी कहानियों में मध्यवर्ग से आने वाले कथाकरों का जीवन, उनकी समस्याओं का चित्रण प्रमुख रहा है। दलित और निम्न वर्ग में से आने वाले कथाकारों ने पंजाबी कहानी के ऊपर से मध्यवर्ग की लक्ष्मणरेखा को तोड़ दिया और नव साहित्य का सृजन किया अर्थात् दलितोत्थान साहित्य का निर्माण किया।

दलित चेतना के अधीन पंजाबी कहानी रचने वाले कहानीकारों में वरियाम संधू का विशेष स्थान रहा है। उन्होंने भारतीय संस्कृति में जड़ रूप में फैली जाति व्यवस्था के अवचेतन के ऊपर पड़े प्रभावों को बड़े ही आकर्षक रुप में चित्रित किया है। मोहन भण्डारी ने अपनी कहानियों में आर्थिक खुशहाली और आर्थिक मंदहाली को अपना विषय बनाया है। मोहन भण्डारी की कहानियों में विचारों को बहुत ही महत्व प्रदान किया गया है। वह पात्रों के प्रति हमदर्दी, घृणा का भाव जागृत कर उसे विशेष अर्थ प्रदान करने की चेष्टा करता है। प्रेम गोरखी दलित वर्ग की दर्द भरी भयानक स्थिति का चित्रण प्रस्तुत करता है। गोरखी के चित्रण में दलित और के शोषण का भी वर्णन देखने को मिलता है। कृपाल कज़ाक दलित वर्ग की सामाजिक, आर्थिक, मानसिक समस्याओं को चित्रित करने के साथ-साथ सभ्याचारक समस्याओं का भी चित्रण करता है। कजाक ने तो आंतरिक सतहों में भी रोमांचकारी दृष्टि डाली है। भूरा सिंह कलेर ने दलित वर्ग की आर्थिक, सामाजिक, सांसारिक समस्याओं को ही वस्तु बनाया है। जिंदर की कहानियों में उच्च श्रेणी समाज के यथार्थ को प्रस्तुत किया गया है। तलविन्दर सिंह ने कृषक वर्ग के शोषण को अपनी कहानियों का आधाार बनाया है। अजमेर सि) ने हाशिये के लोगों की त्रासदिक स्थिति का जटिल चित्रांकन प्रस्तुत किया है। बलजिन्दर नसराली ने भी कृषक वर्ग की समस्याओं का ही चित्रांकन प्रस्तुत किया है। भगवंत रसूलपुरी, अवतार सिंह बलिंग, गुरमीत कड़ियालवी, बलविन्दर गरेवाल, देश राज काली, गुरबचन भूलर आदि कहानीकारों ने समाज के निम्न वर्ग की जीवन-यापनता को कलात्मकता द्वारा प्रस्तुत किया है। अतरजीत पंजाबी के प्रमुख प्रगतिवादी-यथार्थवादी कहानीकारों में से एक है। उन्होंने दलित जीवन की विभिन्न पर्तो का उसके आर्थिक, धार्मिक और सभ्याचारक प्रसंगों में ग्रहण करके यथार्थ के सघन और जटिल रुप में साकार किया है। दलित चेतना के प्रसंग में उसकी कहानियों की बड़ी विशेषता और प्राप्ति इस बात में है कि उन्होंने भारत के बदल रहे सामाजिक-आर्थिक संदर्भ में दलित की बदल रही स्थिति को, सिर्फ उच्च जाति के लोगों की ईर्ष्या भावना तक ही पेश नहीं

किया, अपितु स्थिति की विडम्बना यह है कि खुद दलित जातियों में ही ऐसे भाव हाजिर है। अतरजीत ने ऐसे गुंझलदार यथार्थ को समझकर अपनी सूक्ष्म दृष्टि से अपनी कहानियों को मूर्तिमान किया है। अतरजीत ने पंजाबी कहानी को मध्यवर्गीय परिवेश से अलग करके निम्न वर्गीय परिवेश से जोड़ा है। प्रेम गोरखी का भी पंजाबी दलित कहानी साहित्य में विशेष स्थान है। प्रेम गोरखी की कहानियां मुख्य रुप से भूमिहीन, सामाजिक धरातल से ऊपर जीने के लिए अस्तित्त्व खोज रही मनुष्यता की कहानियां है। गोरखी ने कृषक पात्रों की मनोदशा, सामाजिक स्थिति और जातिगत रुतबे को वास्तविक आधारों के ऊपर पेश किया है। प्रेम गोरखी की कथा जातीय दंभ वाले भारतीय समाज में अमानवीय परिस्थितियां झेलते हुए दलित वर्ग को अपना आधार बनाती है। गोरखी की कहानियां मुख्य रुप से सामाजिक, आर्थिक पक्षों से दबे कुचले, हीन मुनष्यों की दर्दनाक स्थिति और दबी हुई मानसिकता का प्रदर्शन करती है। गोरखी की कहानियां दलित वर्ग की बेबसी, लाचारी, औरतों के साथ होते शारीरिक शोषण के प्रसंग, उच्च जाति के दंभ आदि से पर्दा उठाती है। नयी पूंजीवादी आर्थिक बनावट में चाहे स्थिति काफी परिवर्तित हो चुकी है पर संस्कारक और मानसिक बनावट में उच्च जाति अर्थात सवर्णो में जातीय दम्भ अभी भी कायम है। दलित अभी भी हीन भावना से ग्रस्ति है। दलित वर्ग के समूचे जीवन को यथार्थ रुप में व्यक्त करने में गोरखी ने प्रशंसनीय योगदान प्रदान किया है।

प्रेम गोरखी की दलित जीवन से सम्बन्धित कहानियों के प्रति चार प्रकार की धारणाऐं मुख्य रुप में उभरकर सामने आती है। पहली भारतीय समाज में जाति व्यवस्था का जो ताना – बाना है वह इन पात्रों की मानसिकता में उभरकर निकलता है, धनी जाट किसान और उच्च वर्ग के लोग अपने अहंकार में दलितों का हर पक्ष से शोषण करते है। दूसरा पक्ष यह है कि इस वर्ग के लोग साधनहीन है और धनी किसान और खेत मालिकों के साथ मिलकर ही इनकी जीविका चलती है। खेत मालिक और जिमींदार लोग इनका शारीरिक शोषण करने के साथ – साथ इनकी औरतों को भी हवस का शिकार बनाते है। तीसरा पक्ष दबे – कुचले नीची जाति के लोगों की मानसिकता हीन ग्रंथी का शिकार है। चौथा पक्ष इस वर्ग के लोग जाति – जमाती सामाजिक प्रबंधा के अंदर पिसते हुए अपनी स्थिति, कानूनी अधिकारों, सरकारी प्रबंधा की मदद और मानवीय हकों से वंचित है। दलित वर्ग तिरस्कार, शोषण और घृणा का शिकार है।[3] पंजाबी दलित कहानी साहित्य के क्षेत्र में कुछ ऐसे कथाकारों का भी प्रवेश हुआ। जिनके पास दलित जीवन का प्रमाणिक अनुभव था अर्थात उन्होंने स्वयं इस जीवन को भोगा था। कुछ अन्य कहानीकार भी सामने आते है जो दलित जाति से संबंधित नहीं थे परन्तु उनकी सहानुभूति में स्वयं: अनुभव जैसी प्रमाणिकता थी। कृपाल कज़ाक पंजाबी के ऐसे ही कथाकारों में से एक है। कज़ाक की कहानियां समाज, भाईचारे और रस्मों – रिवाजों के दोहरे मापदण्ड़ों के ऊपर व्यंग्य कसती है। 'पेट की आग' कहानी में लेखक ने भागी की विवश्ता और आर्थिक स्थिति के कमजोर होने पर प्रकाश डाला है। भागी के दो पुत्र थे गेजा और माणा। उसे अपने दोनों पुत्रों से बहुत उम्मीदें थी। उसका बड़ा बेटा गेजा उसे कहता था कि – बेबे तू धैर्य रख मैं तुम्हारे सिर से बट्ठल जल्दी ही उतरवा दूंगा। भागी ने अकालियों से चार बोरियां गेहूँ की ली थी जिसके बदले उसे जिमींदारों को साल भर का गोबर – कूड़ा करना पड़ना था। विवाह या और खुशी, गमी के अवसरों पर उसे कई और तरह के धन्धे – धंधाल भी करने पड़ते थे। पशुओं के सारे कार्य भी भागी को ही करने पड़ते थे।[4] गरीबी के कारण जहां उसे जिमींदारों के कार्य करने पड़ते थे वही उनके पशुओं की भी संभाल भागी के हाथ में ही थी।

भागी ने खण्डे से कुछ पैसे उधार लिये होते है जिस कारण खण्डा, भागी से कहता है – ''देख भागी ! अपना क्या बंटा हुआ है..... पैसे उतारने कौन से मुश्किल है..... यह तो तू जैसे मरजी उतार देना..... यह तो तुम्हारे ऊपर है कि तुमने पैसे किस तरह से उतारने है। तभी भागी कहती है – देख वे खण्डिया पहली बात तो मैं तेरी मां जैसी हूं। दूसरी बात ये कि गरीब की भी कोई इज्जत होती है, मैं गोबर, कूड़ा उठाकर पेट जरुर भरती हूँ...पर किसी के टुकड़ों पर.....।[5]

इस कहानी में भागी के लड़के को पुलिस वाले पकड़ लेते हैं जिस कारण वह माणे के ताऊ से कहती है – '' मैं अब औरत.....? मैं उसे कहां ढुंढती फिरुं इतने बड़े शहर में।..... मैं तुम्हारे आगे हाथ जोड़ती हूँ..... तुम मेरे बेटे को बचा दो। कहते है वहां तो वकीलों की फीस ही बहुत है, वहां के तो किराये, भाड़े ही मान ही है पर अब मेरे पास तो जुएं भी नहीं हैं।''[6] वह पैसे का इंतजाम करने के लिए अकालियों के घर जाती है पर वहां भी कोई उसकी एक नहीं सुनता। इस प्रकार यह कहानी जहां भागी की आर्थिक स्थिति का वर्णन करती है वही उसके संघर्ष का चित्रांकन प्रस्तुत करती है। किस प्रकार दलितों को अपनी जरुरतों से वंचित रहना पड़ता है, अपने भावों को दबाये रखना पड़ता है, लोगों की यातनओं को झेलना पड़ता है आदि का सफल और सूक्ष्म चित्रांकन इस कहानी में देखने को मिलता है।

'अपना अधा' कहानी भूमिहीन, थोड़ी जमीन वाले कृषक वर्ग (दलित) की स्थिति को पेश करती है कहानी का हर पात्र अपनी जमीन बचाना चाहता है चाहे इसके लिए उसे अपनी इज्ज़त और मर्यादा को ही क्यों न बेचना पड़े। कहानी में गामा शरीफ और मेहनती आदमी है। थोड़ी जमीन होने के बावजूद भी वह अपनी कमाई से खुश है पर समस्या उस समय पैदा होती है जब गामा विवाह करवा के अपनी जिंदगी के भावुक और पारिवारिक विकास के बारे में सोचता है पहले – पहले तो गामा की भाभी उसको शारीरिक संबंधों का झांसा देकर उसे अपने नजदीक रखना चाहती है पर मतलब पूरा न होते देख वह गामे द्वारा उसके साथ की गई जोर जबरदस्ती का झूठ इल्ज़ाम लगवा कर उसे गांव से बाहर निकलवा देती है। कथाकार ने भाभी की मनोदशा का वर्णन निम्न चित्रित किया है। ''वह देखती थी कि घर की थोड़ी सी भूमि थी, जिसके इर्द – गिर्द उसका पति, देवर और ससुर आठों पहर जुटे रहते पर घर का छज्जा फिर भी किल्ली पर ही टंगा रहता है। आठ किल्लियों से कौन – कौन पेट भरेगा।''[7] यह कहानी जहां कम धारती के मालिक कृषक परिवार की औरत के स्वार्थी चाल – चलन का भेद खोलती है। वही एक शरीफ, समझदार व्यक्ति गामे के धीरे – धीरे कठोर स्वभाव में तबदील हो जाने का भी चित्रण करती है। गोरखी की अन्य कहानियों में भी निम्न श्रेणी के अंदर स्वार्थ की भावना देखने को मिलती है। गोरखी की गल्प दृष्टि पंजाबी कृषक श्रेणी और उसके साथ दलित वर्ग के यथार्थ को शु) सृजनात्मक दृष्टि से देखती है। गोरखी की अन्य कहानियां जैसे कि 'अधिाकार', 'टल्ला' और 'अगले स्टेशन' तक आदि कहानियां निम्न श्रेणी के अन्दर के स्वार्थ को ही प्रकट करती है।

कहानी 'जिथो सूरज उगदा है' में लेखक ने बलकारी सिंह के शोषण पर प्रकाश डाला है। फौजी, गांव के लोगों को बलकारी सिंह के खिलाफ खड़ा करना चाहता है। वह बलकारी के खिलाफ अर्जी लिखता है सारे गांव वाले फौजी के साथ मिलकर हस्ताक्षर करने के लिए तैयार हो जाते हैं पर हर समय कोई न कोई ऐसी परिस्थिति अवश्य उत्पन्न हो जाती जिससे यह कार्य बीच में ही रुक जाता। गामा, दिहाड़ी वालों के बारे में बात करने लग जाता है वह कहता है कि आजकल तो सारे काम बिहारी ही करने लग गए हैं। इस प्रकार वह वहां जिस मकसद के लिए आए थे उसे भूल जाते है और तरह – तरह की बातें करने लग जाते हैं। वह फैसला करते है कि इन टांगे वाले बिहारियों के स्थान पर वह अपनी ट्रालियां लगा देंगे और इनको गांव से बाहर धकेल देंगे। लोग अब बिजनैंस को बढ़ाने के बारे में सोचने लगते हैं। बलकारी सिंह यह देखकर हंस रहा होता है पर फौजी मन ही मन सोचता है कि एक न एक दिन वह लोगों में चेतना का प्रसार करेगा अर्थात् वह गांव के लोगों बलकारी सिंह के खिलाफ खड़े होने के लिए तैयार करेगा। 'कंद्धा तो बिना' कहानी में लेखक ने तारु की दयनीय स्थिति का वर्णन किया है कहानी में तारु एक तांगे वाला है, तांगा चलाकर ही वह अपनी आजीविका चला रहा होता है। क्योंकि उसकी दोनों बाजूएं फराटे वाले पंखे से कट चुकी थी। एक शाम तारु के घर कई लोग एकत्रि होकर आते हैं तारु उखड़ता हुआ अंधेरे में इधर – उधर झांकने लगता है, चैंचल सिह उसे कहता है कि – ''वे वोट किस तरफ डालनी है इस बार.....? तारु जैसे वहां था ही नहीं। चुप चुभने लगी, आये हुए व्यक्ति सोचने लगे, देख मान के साथ आए है। यह सुन उसके अंदर बारुद फटता है..... मैं कहता हूं इस मान से क्या मुझे जमीन मिल जाएगी..... घर तो बसता नहीं कर दिया मोस इस मान ने। किसी कंजर को नहीं डालनी वोट – वाट हमने..... मैने भी लोगों को देख लिया हैं।''[8] इस प्रकार यह कहानी जहां तारु की आर्थिकता को स्पष्ट करती है वही दलित राजनीति को भी स्पष्ट करती है।

'मांसाहारी' कहानी में लेखक ने एक दलित स्त्री के शोषण का वर्णन किया है आर्थिक तंगियों के चलते उसे किस प्रकार का जीवन यापन करना पड़ता

है। उसका सफल चित्रांकन इस कहानी में देखने को मिलता है। छिंदो जवानी के समय बहुत खुबसूरत थी। एक बार उसका ससुर मोटर पर उसे अकेली देखकर दुष्कर्म करने की चेष्टा करता है। अपने इस कुकृत्य को छुपाने के लिए वह छिंदो को घर से बाहर निकलवा देता है, छिंदो अब अपना घर का गुजारा चलाने के लिए लोगों के घरों में काम करना शुरु कर देती है और पर पुरुषों से संबंध स्थापित करने लग जाती है। वह मास्टरानी से कहती है.....'' क्या करुं दीदी मेरा तो गुजारा बड़ी मुश्किल से चलता है। पिछले हफ्ते से गैस खत्म हुई है.....थोड़ी - थोड़ी लकड़ियां एकत्रित करके गुजारा कर रही हूं। आटा है नहीं.....घर का नमक, तेल का गुजारा बड़ी मुश्किल से होता है। अच्छा खाकर नहीं देखा.....फिर बिजली का बिल..... सोचती हूं दो तीन कोठियों में और काम कर लूं।''[9] छिंदो को लोग तो जादूगरनी कहते थे क्योंकि वह जिसके जहां भी काम करने जाती थी वहां के पुरुषें से संबंध स्थापित कर लेती थी। मास्टरानी के पति पर भी वह अपना पूरा प्रभाव स्थापित कर लेती है। जिस कारण वह छिंदो से कहता है कि तुम्हारा यह जिस्म गन्दे - गन्दे लोगों के लिए नहीं बना । जिंदर की कहानी 'सोरी' में आधुनिक वैज्ञानिक युग में व्याप्त जाति - पाति का चित्रण देखने को मिलता है। लेखक के अनुसार जाति - पाति का विभाजन अभी भी कायम है। एक पढ़ा लिखा हुआ व्यक्ति भी इसी भावना से ग्रसित है। कहानी में मिस्टर सिंह, अरोड़ा शर्मा आदि पात्रों का व्यवहार जातीय विभाजन को प्रस्तुत करता है। ''वह सतलुज पार की है, कही उसे मेरी बिरादरी का तो पता नहीं लग गया? पर यह संभव नहीं हो सकता। मैं तो अपनी सब कास्ट की जगह पर अपने गांव का नाम लगता हूं। मेरी जाति तो सिर्फ मेरी सर्विस बुक में दर्ज थी। जसविंदर की कास्ट वाला खाना भी उसकी मम्मी ने भरा था जसविन्दर गिल। मैने इसका विरोध न किया अपितु मुझे इससे संतुष्टि मिली। संतोष ने उसको उसकी कास्ट दी थी पर पुत्र तो आखिर वह मेरा है। यदि मुझे उसका कास्ट सर्टीफिकेट बनवाना पड़ा तो मैंने झट से बनवा लेना है।''[10]

लेखक ने इस कहानी के माध्यम से यह स्पष्ट किया है कि जब निम्न जाति के लोगों को सुविधाएं या नौकरियां लेनी होती है तो वह अपनी जाति पर गर्व महसूस करते है। पर जब समाज में रहना होता है तो अपनी जाति छुपा कर रहते है। कहानी का पात्र अपने नाम के पीछे अपनी जाति का सूचक शब्द लगाने की अपेक्षा अपने गांव का नाम लगाता है ताकि लोग उसकी जाति को जान न सके और उसके साथ भेदभाव का व्यवहार न अपनाएं। जाति - पाति के प्रसंग में मध्यवर्गीय नौकरी पेशा, ऊंची श्रेणीयों की आंतरिक तस्वीर को यह कहानी बाखूबी से चित्रित करती है। यह कहानी निम्न श्रेणी के मानसिक और भौतिक सहूलतों के अंतर - विरोधों को भी प्रकट करती है। इस कहानी के माध्यम से निम्न जाति में व्याप्त हीन भावना को भी उजागर किया गया है। किस तरह से उच्च वर्ग अभद्र शब्दों का प्रयोग इनके साथ करता है इस का चित्रांकन भी इस कहानी में देखने को मिलता है।

पंजाबी कहानियों में दलित वर्ग एक नये रुप में उभरकर सामने आया है। पंजाबी कहानी की वस्तुगत स्थिति ने दलित राजनीतिक चेतना की नई परतों को रुपमान किया है। यह एक शुभ शगुन ही है कि पंजाबी कहानीकारों ने दलित वर्ग के शोषण और उनके अंदर जागी चेतना को अपनी रचनाओं का आधार बनाया है। पंजाबी दलित कहानियों में जहां दलित जिन्दगी के अस्तित्व को प्रत्यक्ष रुप से लक्षित किया गया है वही सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक जीवन, तनावों, और हीन भावनाओं को भी बड़ी कलात्मकता के साथ प्रस्तुत किया गया है। पंजाबी दलित कहानी को अनुभव की विभिन्नता के पक्ष से काफी बल मिला। बेशक पंजाबी दलित कहानी को लेकर काफी विवाद रहे। यह विवाद मुख्यत: भाषा और शिल्प पक्ष के कमजोर होने के कारण थे पर फिर भी पंजाबी दलित कहानी साहित्य कला की कसौटियों पर सूचनाप्रद साहित्य है और इसे किसी भी आधार पर रद्द करना उचित नहीं है।

पंजाबी दलित कहानी अति जटिल है। विषय की विलक्षणता और प्रस्तुतीकरण की सूक्ष्मता पंजाबी कहानियों को एक नया रुप प्रदान करती है। सातवें दशक में पंजाबी कहानीकारों ने अछूत विषय के बारे में लिखकर बाकी भाषाओं के कहानीकारों के साथ चलने की कोशिश की। साहित्य की इस विशेष धारा का आगमान किसी विशेष आन्दोलन की देन नहीं है और न ही किसी राजनीतिक सरप्रस्ती ने इनके विकास में बढ़ावा किया है। इस साहित्य के अंतर्गत आम आदमी को पेश किया गया है। श्रेणिक चेतना को सामूहिक चेतना में तबदील किया गया है साहित्य के पहले मॉडलों को रद्द करके नये मॉडल स्थापित किये गए हैं।[11]

संदर्भ सूची: -

1. डॉ. सुखविन्दर सिंह रंधावा, चिराग, अक्तूबर - दिसम्बर 2002, पृ. 60
2. गुरमीत कल्लर माजरी, तीसरी दुनिया, पृ. संख्या 57
3. परमजीत कौर, पंजाबी कहानी में दलित सरोकार, पृ. 115
4. अतरजीत, पेट की आग, पृ. 151
5. वही, पृ. 151
6. वही, पृ. 158
7. प्रेम गोरखी, अपना अध, पृ.73
8. कृपाल कजाक, कंद्ध तो बिना, पृ. 64
9. भगवंत रसूलपुरी, मांसाहारी, पृ. 158
10. गुरमीत कल्लरमाजरी, तीसरी दुनिया, पृ. 181'
11. गुरमीत कल्लरमाजरी, तीसरी दुनिया, पृ. संख्या 56

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.ror.isrj.org